The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 2 | July-September 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

आधुनिक युग में नौकरशाही का विकास

डॉ0 योगमाया उपाध्याय
शासकीय गजानंद अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा
(Govt. G.N.A. P.G. College Bhatapara)

नौकरशाही के अपने अनेक दोष हैं। यह समाज से दूरी बना कर रखती है, अहंकार की भावना से ग्रस्त रहती है तथा नौकरशाहों पर अक्सर भ्रष्टाचार के बड़े आरोप लगते रहते हैं किन्तु नियोजन एवं विकास में नौकरशाही की भूमिका के महत्व को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता , विशेषकर भारत जैसे देश में जहाँ राजनीतिक नेतृत्व की कुशलता सदा संदेह के घेरे में रही हैं। वैसे भी भारत की सामाजिक संरचना इतनी अधिक व्यापक हैं तथा सामाजिक–आर्थिक समस्याएं इतनी विशाल हैं कि एक निरक्षर अथवा अतिअल्प ज्ञान के स्तर वाले राजनीतिक नेतृत्व से इसके समाधान की अपेक्षा नहीं की जा सकती। भारत में नियोजना एवं विकास में नौकरशाही की भूमिका का मूल्यांकन करने से पूर्व नौकरशाही संरचना के सैध्दन्तिक परिपेक्ष्य पर दृष्टिपात कर लेना उचित रहेगा।

नौकरशाही वर्तमान व्यवस्था की विशेषता है इसलिये आधुनिक काल के सन्दर्भ में इसका विवेचन करना अधिक युक्ति संगत रहेगा। वर्तमान में नौकरीशाही एक ऐसा संगठन हैं जिसमें स्तरीकृत पदों के कार्यालयों की एक संगठित श्रृंखला होती है , जिसमें अनेक कर्तव्य अन्तर्निहित होते हैं उनके प्राधिकार सीमित तथा विशिष्ट नियमों द्वारा पूर्ण रूप से परिभाषित होते हैं। नौकरीशाही के सम्बन्ध में सबसे व्यापक एवं व्यवस्थित विचार जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने प्रस्तुत किये हैं। मैक्स वेबर ने नौकरशाही को न केवल परिभाषित ही किया है अपितु इसका एक आदर्श प्रारूप भी प्रस्तुत किया हैं। वेबर ने आधुनिक पूजीवादी व्यवस्था में नौकरशाही को एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप मे रेखांकित किया है किन्तु साथ ही नौकरशाही की कमियों को भी इंगित किया हैं। नौकरशाही आधुनिक जटिल औद्योगिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग बन चुकी है। नौकरशाही के सम्बन्ध में मैस वेबर के अतिरिक्त जिन विद्वानों में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं उनमें से प्रमुख हैं – एच.डी. लास बैल , कार्ल मैनहीम , एचत्र जे. लास्की , डेनियल वारनोट एवं राबर्ट मर्टन।

पीटरब्लॉ – ''नौकरशाही एक ऐसा संगठन है जो बड़े आधार पर प्रशासनिक कार्यो का क्रमबध्द रूप से संचालन करने के लिये बहुत से व्यक्तियों के कार्यो द्वारा समन्वित होता है।''

रॉबर्ट मर्टन – ''कुल मिलाकर नौकरशाही कुशल , प्रशिक्षित एवं कठोर अनुशासन प्रिय व्यक्तियों का ऐसा संगठन है जो पद सोपानिक व्यवस्था में ऊँच–नीच के आधार पर संगठित होता है।''

- नौकरीशाही प्रशासनिक कार्यो को संचालित करने वाली एक विशिष्ट पध्दति हैं।
- नौकरशाही में कार्य एवं अधिकारों का स्पष्ट विभाजन , निश्चित नियमों के द्वारा स्थापित किया जाता हैं।
- नौकरशाही में प्रत्येक कार्य लिखित रूप में सम्पादित किया जाता है।
- नौकरशाही का प्रत्यक्ष सम्बन्ध राजनैतिक दल विशेष से नही , अपितु सरकार नामक संगठन से होता हैं।
- नौकरशाह के अधिकार एवं कर्तव्य सुनिश्चित होते हैं तथा उनके कठोर अनुपालन की अपेक्षा की जाती हैं।
- नौकरशाह अधिकारियों को समय–समय पर आधुनिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है ताकि वे अपनें कार्यो के सम्पादन में कभी अक्षम न हो।

नौकरशाही का विकास उनकी क्षमता एवं कार्यकुशलता के कारण हुआ है वैसे नौकरशाही का विकास सामाजिक केन्द्र पर निर्भर करता हैं। आधुनिक युग में नौकरशाही के विकास के कारण –

- वर्तमान वित्तीय व्यवस्था में मुद्रा के सफल प्रयोग के लिये एक विशेषज्ञ का होना नितान्त आवश्यक हैं। नौकरशाह इस आवश्यकता को पूरा करता हैं।
- संचार साधनों के तीव्र विकास ने नौकरशाही की आवश्यकता को बल प्रदान किया हैं।
- बृहद् स्तरीय उद्योगों के कुशल प्रबन्धन के लिये विशेषज्ञों की आवश्यकता ने नौकरशाही को अपरिहार्य बना दिया है।
- न्याय व्यवस्था के युक्तिकरण ने नौकरशाही के विकास को प्रोत्साहित किया हैं।
- आधुनिक राज्यों के कार्य विस्तार से राज्य के कार्य अत्यधिक जटिल हो चुके हैं जिनका सफल सम्पादन एक राजनेता नहीं कर सकता हैं। यह कार्य केवल एक नौकरशाह ही सफलतापूर्वक कर सकता हैं।

आधुनिक प्रजातंत्र और नौकरशाही परम्पर अन्तर्सम्बन्धित हैं। मैक्स वैबर ने भी माना है कि ''लोक प्रजातंत्र प्रशासन में आनुवंशिक और धनिक तन्त्रीय विशेषाधिकारों को समाप्त कर देता हैं। ख्याति व्यक्तियों के वंशानुगत प्रशासन के स्थान पर वेतनभोगी कर्मचारियों की नियुक्ति अनिवार्य हो जाती है।'' किसी भी समाज की लोकतान्त्रिक संरचना , नौकरशाही के लिये एक अनुकूल आधार प्रदान करती हैं। कहा जाये तो नौकरशाही के विकास के लिये उत्तरदायी कुछ कारण ऐसे लक्षणों का उल्लेख करते हैं जो वर्तमान युग में महत्वपूर्ण हैं।

नौकरशाही के सम्बन्ध में प्रायः कहा जाता है कि यह एक आवश्यक बुराई है अर्थात् इस संगठन की अपनी अनेक कमियां जो हैं। किन्तु नौकरशाही राज्य के संचालन के लिये आवश्यक बन चुकी है , विशेषकर वर्तमान जटिल सामाजिक संचालन के लिये तो नौकरशाही अनिवार्य आवश्यकता बन ही चुकी हैं। विकासशील समाज भी पूरी तरह से नौकरशाही पर आश्रित हो चुके हैं। इसके कारण सम्भवतः कार्य के प्रति नौकरशाही की प्रतिबध्दता कार्य सम्पादन का कुशुल तकनीकी ज्ञान ,

समस्याओं से निपटने की दृढ़ इच्छा , शक्ति एवं विभिन्न वैधानिक संकटों से सरकार की रक्षा कैसे हो खैर जो भी है , नौकरशाही अपने क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में कार्य करती हैं। वर्तमान में नौकरशाही के बढ़ते प्रभाव एवं इसके महत्व में नौकरशाही के कार्यो के परिचय से जाना जा सकता है वर्तमान संरचना में नौकरशाही के प्रमुख एवं व्यवहारिक कार्य :–

सरकार को विभिन्न सूचनायें उपलब्ध कराना :– यह नौकरशाही का सर्वप्रथम कार्य हैं। एक नौकरशाह सरकार के प्रत्येक स्तर पर अपने क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाये उपलब्ध कराता हैं। इन्ही सूचनाओं के आधार पर सरकार को विकास सम्बन्धी विभिन्न नीतियों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त होती हैं। यदि हम सीधे उच्च स्तर की ही बात करें तो कैबिनेट की मीटिंग का उदाहरण दे सकते हैं। समय–समय पर आयोजित केन्द्रीय कैबिनेट राज्य या राज्य कैबिनेट में विभिन्न निर्णय लिये जाते हैं। जनता उन निर्णयों से प्रायः लाभान्वित होती हैं। किन्तु कैबिनेट की मीटिंग में लिये जाने वाले विभिन्न निर्णयों का श्रेय सरकार को नहीं नौकरशाही को जाता हैं। कैबिनेट की मीटिंग में किसी भी विभाग का मंत्री कुछ प्रस्ताव रखता हैं जिन्हे अकसर स्वीकार कर लिया जाता हैं। किन्तु इन प्रस्तावों को तैयार करने के पूर्व इनके तकनीकी एवं वैधानिक प्रभावों का भी अध्ययन किया जाता हैं। इस हेतु नौकरशाह (जो कि सम्बन्धित विभाग का सचिव अधिकारी होता हैं) पूर्व में लिये कुछ निर्णयों के सम्बन्ध में सूचनाये प्रदान करता हैं। इन सूचनाओं के आधार पर मंत्री को एक सही प्रस्ताव के निमार्ण के लिये निर्णय लेने में सहायता मिलती हैं। ये सूचनायें किसी पूर्व सरकार द्वारा लिये गये निर्णय के रूप में हो सकती हैं , किसी अन्य राज्य सरकार द्वारा लिये गये निर्णय के रूप में हो सकती हैं या फिर माननीय न्यायालय या उच्च न्यायालय के निर्देशो के रूप में हो सकती हैं।

नीति निर्माण में सहायता :– सैध्दांतिक रूप से कहा जाये तो नीति निर्माण का कार्य सरकार अर्थात व्यवस्थापिका का होता हैं। किन्तु व्यवहारिक रूप से देखा जाये तो व्यवस्थापिका के विभन्न मंत्रियों के ज्ञान का स्तर इतना समृध्द नहीं होता कि वे अपनी कल्पनाशीलता के आधार पर कोई निर्णय ले सके। नौकरशाही इस कमी को दूर करती हैं। किसी भी नीति का निमार्ण करने से पूर्व सम्बन्धि विभाग का मंत्री अपने विभाग के सचिव (नौकरशाह) के साथ मीटिंग करता हैं। नीति के सम्बन्ध में मंत्री एवं सचिव विचार–विमर्श करते हैं। सचिव उस नीति के सम्भावित सही एवं गलत परिणामों से मंत्री को अवगत कराता हैं। सभी मंत्री अपने सचिव के परामर्श को महत्व देते हैं तथा अन्त में मिलजुलकर एक नीति का प्रस्ताव तैयार कर लिया जाता हैं। इस प्रकार कहा जाये तो नौकरशाही के अभाव में एक अच्छी नीति के निमार्ण की कल्पना करना सम्भव नही हैं।

नीतियों का क्रियान्वयन :– किसी भी विषय के सम्बन्ध में निति का निर्माण सैध्दान्ति रूप से भले ही महत्वपूर्ण हो , व्यवहारिक रूप से अधिक महत्वपूर्ण उस नीति का क्रियान्वयन हैं। क्रियान्वयन का यह दायित्व नौकरशाही का ही होता हैं। जब एक नीति के सम्बन्ध में मन्त्रालय द्वारा निर्णय ले लिया जाता है , तब उसे एक प्रस्ताव के रूप में तैयार नौकरशाहों के द्वारा ही किया जाता हैं। इस प्रस्ताव

को मंत्री कैबिनेट की मीटिंग में प्रस्तुत करता हैं। प्रस्ताव पारित हो जाने के पश्चात उस प्रस्ताव को शासनादेश के रूप में तैयार करना होता हैं। प्रस्ताव पारित हो जाने के पश्चात उस प्रस्ताव को शासन देश के रूप में तैयार करना होता हैं। शासनादेश तैयार करने का सम्पूर्ण कार्य नौकरशाही द्वारा ही किया जाता हैं। यह भी नौकरशाही पर ही निर्भर करता है िकवह शासनादेश को अंतिम रूप प्रदान करने में कितना समय लगाती हैं।

जनसामान्य एवं सरकार के मध्य सामंजस्य स्थापित करना :– वर्तमान सामाजिक व्यवस्था इतनी व्यापक एवं जटिल हो चुकी है कि सरकार एवं जनता के मध्य प्रायः एक बड़ी दूरी बनी रहती हैं। सकरार जनता के साथ अधिक घुलमिल नहीं पाती इससे सरकार को जनता की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं का ज्ञान उचित रूप से नहीं हो पाता हैं। वैसे भी मंत्री पद पर आसीन होते ही एक राजीतिक नेता एक उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति बन जाता है तथा स्थिति में नौकरशाह जनता की समस्याओं को सुनते हैं तथा उन्हें विभाग के मंत्री तक पहुंचते हैं। अनेक मामलों में जनता की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं के ध्यान में रखते हुए नीति का निर्माण कर लिया जाता है तथा अपने मंत्री के प्रति जनता में शिकायत का भाव भी नहीं रहता हैं। इस प्रकार नौकरशाह लनसामान्य एवं सरकार के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वैधानिक कठिनाई से सरकार की रक्षा :– सरकार एक बहुत राजनैतिक संगठन है जिसे अनेकों प्रकार के सही गलत दायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। यदपि सरकार अत्यन्त सोच विचार के पश्चात ही एक जनरीति का निर्माण करती हैं। किन्तु अक्सर ऐसा हो जाता है कि किसी नीति के कारण सरकार के सामने वैधानिक संकट उत्पन्न हो जाता हैं। वैधानिक नियमों का अधिक ज्ञान न होने के कारण सरकार ऐसी स्थिति में असहाय हो जाती हैं। तब वैधानिक नियमों का ज्ञान रखने वाला नौकरशाह इस स्थिति में सरकार की सहायता करता है तथा उत्पन्न वैधानिक संकट का सफलपूर्वक निराकरण करता हैं। इस प्रकार एक नौकरशाह कार्यो के क्रियान्वयन का कार्य तो करता ही है , सरकार के रक्षा कवच के रूप में भी कई कार्य करता हैं। इसलिये वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में नौकरशाह के महत्व को स्वीकार किया जाता हैं। नौकरशाह मात्र एक प्रशासनिक अधिकारी नहीं रह गया है , बल्कि सरकार का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका हैं।

नौकरशाही के दृष्प्रकार्यो :–

- **स्वयं को सर्वशक्तिमान समझना –** यह नौकरशाही का सबसे प्रबल दोष है , यह ठीक है कि प्रशासनिक कार्यो का निष्पादन नौकरशाही ही सफलतापूवर्क करती हैं साथ ही यह भी सत्य है कि सरकार के विभिन्न कार्यो को परिणति नौकरशाह सरकार द्वारा नियुक्त सेवक होते हैं होते हैं जिनका दायित्व जनसमस्याओं में निदान में एक सरकारी कर्मचारी के रूप में सरकार की सहायता करना हैं। हिन्तु सरकार की कमियों को देखते हुए नौकरशाह धीरे–धीरे सरकार के कार्यो में आवश्यकता से अधिक हस्तक्षेप करने लगते हैं तथा एक समय ऐसा आता है कि

नौकरशाह स्वयं को सरकार से ऊपर अर्थात सर्वशक्तिमान समझने लगता हैं। संकट तब उत्पन्न होता हैं। जब नौकरशाह ''अहं बृहमास्त्रि'' की धारणा को अपना लेते हैं। सरकार को अपने निर्णयों को बारम्बार बदलने के लिये बाध्य करना इनकी आदत बन जाती हैं। नौकरशाही के इस मनोवृत्ति को त्यागना होगा।

- **जनसामान्य को हेय दृष्टि से देखना** :— सरकार के कर्मचारी होने के नाते एक नौकरशाह जनता का सेवक होता हैं। किन्तु नौकरशाहों को सरकार द्वारा अत्यधिक महत्व दिये जाने के कारण धीरे—धीरे नौकरशाहों में अंहकार की भावना विकसित होती हैं। और वह स्वयं को शेप जनता से श्रेष्ठ समझने लगता हैं। जनता के कार्यो का समय से निपटारा न करना , जनता के प्रति कठोर व्यवहार प्रदर्शित करना तथा बात—बात पर जनता को झिड़कना नौकरशाह की एक दिनचर्या बन जाती हैं। विडम्बना तो यह कि नौकरशाह इस तरह की कार्यप्रणाली एवं इस प्रकार के व्यवहार को नौकरशाही के सफल क्रियान्वयन के लिये आवश्यक मानते हैं। जबकि एक नौकरीशाह की शैक्षिक योग्यता का स्तर अनेक सरकारी सेवकों की शैक्षिक योग्यता के स्तर से बहुत कम होता है।
- **अत्यधिक नियमप्रियता** :— कार्य सम्पादन में नियमों का पालन करना कार्य के सफल सम्पादन के लिये आवश्यक होता है। किन्तु संकट तब उत्पन्न होता है जब नियमों की आड़ में कार्य को लटकाया जाने लगे। नौकरशाह नियमों की एक ऐसी श्रृंखला तैयार कर देते हैं कि कोई भी कार्य नियमों की इस श्रृंखला के बाहर नहीं निकल पाता एक नौकरशाह यह नही देखता कि कि नियम के आधार पर अमुक कार्य को सम्पन्न किया जा सकता हैं। बल्कि वह यह देखना प्रारम्भ कर देता है। नौकरशाह के चक्कर लगाते लगाते जनसामान्य की कमर टेढ़ी हो जाती हैं किंतु काम नहीं हो पाता यह स्थिति विचारणीय हैं।
- **आर्थिक भ्रष्टाचार** :— आर्थिक भ्रष्टाचार सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त हो चुका है इसलिये केवल नौकरशाही पर इस मामले में आरोप लगाना उचित नहीं हैं। किन्तु वर्तमान व्यवस्था में नौकरशाही के महत्व एवं इसके उत्तरदायित्वों को देखते हुए नौकरशाही का भ्रष्टाचार मुक्त होना आवश्यक हैं।

भारत में नियोजन एवं विकास में नौकरशाही की भूमिका — भारत एक परम्परावादी एवं ग्रामीण समाज रहा हैं। समाजों को सामाजिक—आर्थिक विकास की दौड़ में सम्मिलित करना एवं सफलता प्राप्त करना बड़ा ही चुनौतीपूर्ण कार्य होता हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1950 में भारतीय संविधान का निर्माण किया गया और अब भारत के सामाजिक—आर्थिक विकास के लिए 15 मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना की गई तथा सन् 1951 से प्रथम पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ की गई तब सभी के सामने एक ही यक्ष प्रश्न विद्यमान था क्या भारत जैसे अंधविश्वास , परम्परावादी ग्रामीण एवं अंत्यन्त पिछड़े हुए समाज में विकास की लहर दौड़ सकेगी। यहाँ के लोगों की रूढ़िवादी मानसिकता को आधुनिक , तार्किक एवं व्यवहारिक बनाया जा सकेगा। क्या भौगोलिक एवं धार्मिक रूप से विखण्डित राष्ट्र का पुर्ननिर्माण किया जा सकेगा। किंतु ये सभी आंशकाये सिध्द हुई और आज भारत विकसित राष्ट्रों के समकक्ष खड़ा होने की तैयारी में हैं। ये सब अचानक ही नही हुआ है इसके लिये बड़े प्रयास किये गये है और ये प्रयास एकांगी नहीं

बहुविध हैं। इस कार्य में विभिन्न सरकारों ने भागीरथ कार्य किया हैं , जनता ने भरपूर सहयोग दिया तथा समय–समय पर मिलने वाली विदेशी आर्थिक सहायता ने बड़ी राहत से जुड़ा हुआ जो एक वर्ग है , जिसने अपनी कार्यकुशलता से भारत में नियोजन एवं विकास की गतिविधियों को नवीन क्षितिज प्रदान किया है यह है हमारा प्रशासनिक संगठन अर्थात नौकरशाही। इसमें कहीं भी किसी को यह सन्देह नही होना चाहिए कि हमारी सरकार की कार्यकुशलता सदा सन्देह के दायरे में रही हैं। ऐसे में यदि किसी वर्ग ने नियोजन एवं विकास में सरकार की कमियों की दूर करने का प्रयास किया है, विकास हेतु बनने वाली नीतियों को व्यवहारिक एवं आर्थिक एवं सार्थक रूप प्रदान किया है तो वह नौकरशाही ही हैं।

भारत में 10 वी पंचवर्षीय योजना लगभग सफलतापूर्वक कियान्वित हुई है तथा 11 वीं पंचवर्षीय योजना अप्रैल 2007 से शुरू हो गई हैं इसका अधिकाधिक श्रेय हमारे नौकरशाहों को ही जाता हैं। यद्पि नौकरशाही की अपनी कुछ कमियां हैं और ये छोटी भी नहीं हैं किंतु कमियाँ तो प्रत्येक संगठन एवं प्रत्येक व्यवस्था में होती हैं। नौकरशाही की उपलब्धिया अधिक हैं। भारत में नौकरशाही ने अपनी कार्य प्रतिबध्दता , नियमप्रियता एवं कठोर अनुशासन के माध्यम से विकास की नीतियों को परम्परावादी समाज पर लागू करने का साहस किया है तथा परिवर्तन लाने में महती भूमिका निभायी हैं।

भारत में विकास का आधार बनी पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण से पूर्व प्रत्येक राज्य की सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है ताकि योजना निर्माण में प्रत्येक राज्य के विकास को प्रतिनिधित्व मिल सके। इन सूचनाओं को समय बध्द एवं वैज्ञानिक विधि से नौकरशाहों द्वारा ही एकत्रित किया जाता है। तथा इन सूचनाओं को भारतीय योजना में भी केबिनेट सचिव एवं अन्य वरिष्ठ नौकरशाहों का अभूतपूर्ण परामर्श लिया जाता है तथा योजनाओ को अंतिम रूप प्रदान किया जाता है। किसी भी नीति को सुखद प्रभावों अथवा दृष्परिणामों का सही ज्ञान एक मंत्री की तुलना में नौकरशाह को अधिक होता है क्योकि एक नौकरशाह के तकनीकी ज्ञान का स्तर अन्यों की तुलना में अत्यधिक ऊंचा होता है। भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के लगभग 60 वर्ष के कार्यकाल में विकास की उपलब्धियों में नौकरशाही की भूमिका को कुछ संक्षिप्त बिन्दुओं के आधार पर इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :–

- भारत एक कल्याणकारी राज्य है कल्याणकारी राज्य में अनेक कल्याणकारी नीतियों का निर्माण अपरिहार्य होता है। नौकरशाही ने इस नीतियों के निर्माण में महत्वूपर्ण भूमिका निभायी हैं।
- भारत जैसे अतिजनसंख्या एवं पयाप्त सामाजिक–आर्थिक भिन्नता वाले राष्ट्र के सम्बन्ध में समानता पर आधारित नीति का निर्माण करने के लिये जिस जिस कल्पनाशीलता एवं साहस की आवश्यकता होती है वह नौकरशाही ने ही अब तक की सरकारों को देने का कार्य किया हैं।

- भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में औद्योगीकरण ने बड़ी एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अपने तकनीकी ज्ञान के कारण भारत में उद्योगों के सफल संचालन में नौकरशाही ने सबसे अधिक योगदान दिया है।
- नीतियों का निर्माण भले ही व्यवस्थापिका द्वारा किया जाता है किन्तु उनके क्रियान्वयन का सम्पूर्ण दायित्व नौकरशाही पर होता हैं। भारत जैसे रूढ़िवादी समाज में इन परिवर्तनवादी नीतियों को क्रियान्वित करना सम्भव नहीं था। किन्तु अपनी कार्य प्रतिबध्दता , साहस एवं कठोर अनुशासन के माध्यम से नौकरशाहों ने इन नीतियों को न केवल भारतीय समाज पर लागू किया बल्कि सफलतापूर्वक इनका संचालन भी किया।
- जनहित के लिये बनायी जाने वाली नीतियों के लिये जनता की आवश्यकताओं का ज्ञान होना आवश्यक होता है , विशेषकर एक लोकतांत्रिक समाज में। भारत में यह आसान कार्य नही था। जनता के मध्य रहकर जनता की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं से परिचित होकर नौकरशाही ने इन इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को सरकार तक पहुँचाने का पुनीत कार्य किया हैं।

निष्कर्ष :– भारत के सामाजिक–आर्थिक में तथा नीतियों के निर्माण में नौकरशाही का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। आज भी नियोजन एवं विकास के मामले में भारतीय राजनीतिक नेतृत्व पूर्ण रूप से नौकरशाही संगठन पर आश्रित हैं। यद्पि नौकरशाही संगठन की अनेक त्रुटियां भारतीय नौकरशाही में भी व्याप्त हैं यदि भारतीय नौकरशाही में व्याप्त इन कमियों (भारतीय नौकरशाही की कमियों का अध्ययन के लिये इसी अध्याय करने में 'नौकरशाही के दुष्प्रकार्य' शीर्षक का अध्ययन करें। वो दूर कर लिया जाये तो भारत में नियोजन एवं विकास में नौकरशाही की भूमिका और अधिक प्रभावशाली हो सकती हैं।

संदर्भ :–

(1) लेखक राजेश्वरी पांडेय "Indian Society and Social Change" 200–220 |
प्रकाशन : Lakshmi Narain Agarwal.

(2) लेखक राजेश्वरी पांडेय "Impact of Modernization" पृष्ठ 2010–2010
प्रकाशन Lakshmi Narain Agarwal.

(3) डॉ.जी.आर मदान / डॉ. अमित अग्रवाल ''परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र''
280–284 प्रकाशन विवेक, जवाहर नगर दिल्ली–7 2005–07.